बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह
(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 159 /2026) Year: 8th

जिला: बाँदा | जारी करने की तिथि: 01.08.2026

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ मृदा नमी संरक्षण तथा खर पतवार नियंत्रण की दृष्टि से समस्त फसलों की बुआई मेड़ी पर या उठी हुई क्यारियों में पलवार का प्रयोग करके ही करें। लोबियाए भिंडीए बैंगन टमाटरए मिर्च तथा कद्दू वर्गीय फसलों में काली पॉलीथिन अथवा सुखी घास की पलवार प्रयोग करे। कद्दू वर्गीय सब्जियों में तार झाड़ी अथवा पंडाल बनकर लताओं को ऊपर चढ़ने की व्यवस्था कर दें। ➢ खड़ी फसलों में समुचित ढंग से खरपतवार नियंत्रण करें ताकि कीड़ो एवं रोगों का प्रकोप काम हो। खेत से जल.निकासी का समुचित प्रबंध करे। ➢ फसलों को थ्रिप्स तथा सफेद मक्खी जैसे चूसक कीड़ों के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए यथावश्यक उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें । ➢ वर्षा ऋतु हेतु टमाटर बैगन मिर्च की तैयार पौध की रोपाई कर दें तथा खरीफ प्याज की पौधशाला तैयार कर लें। सीधी बोई जाने वाली फसलों की भी उपरोक्त सुझावों के अनुसार बुआई कर दें। बुआई से पहले प्रति किलो बीज में २ ग्राम कार्बेंडाजिम अथवा कैप्टन मिलाकर बीजोपचार करें तथा सिंचाई के जल में प्रति लीटर २ ग्राम कार्बेंडाजिम घोलकर ड्रेचिंगध सिंचाई करें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	**शस्य-प्रबंधन** कृषि उत्पादन में मौसम की मुख्य भूमिका होती है। कृषि उत्पादन की सफलता सामन्य मानसून एवं अनुकूल मौसम पर निर्भर करती है। बीजों के अंकुरण से लेकर पकने तक एक उपयुक्त मौसम की जरूरत पड़ती है जो कम से कम एक निश्चित अवधि तक होनी चाहिए। ➢ इस मौसम में बोवाई के लिये दो बरसात के बीच कम अन्तराल होने के कारण कम समय मिल पाता है। ➢ इस मौसम में बोई गयी फसलों को विशेष रखरखाव की जरूरत होती है। ➢ अधिक वर्षा की दशा में उपयुक्त जल निकास की व्यवस्था करनी चाहिए। ➢ अधिक वर्षा के कारण उगे हुये पौधे स्थिर नहीं हो पाते और कभी कभी वे नष्ट हो जाते है। ऐसी दशा में पुनः बोआई किया जाना आवश्यक होता है। ➢ बुवाई के प्रथम एक माह तक खरपतवार का उपयुक्त प्रबंधन करना चाहिए। ➢ सीजन के मध्य में वर्षा बंद हो जाने की दशा में कम अवधि की कम पानी चाहनेवाले फसलों का चयन करें ➢ श्रीअन्न फसलों की बुबाई का काम शीघ्र पूर्ण कर लें।

		➢ जल निकास की समुचित व्यवस्था रखें। ➢ धान आदि फसलों में बोआई/ रोपाई के तुरन्त बाद यदि खरपतवार नाशी का प्रयोग नही किया जा सका हो तो बोआई /रोपाई के **25-30** बाद कुछ चयनित खरपतवारनाशी जैसे कि नोमनी गोल्ड **25** ग्राम सक्रिय तत्व का प्रति हेक्टर की दर से छिड्काव करें। ➢ पायराजो सल्फ्यूरॉन नामक दवाई का रोपाई के **2** से **3** सप्ताह के मध्य **25** ग्राम सक्रिय तत्व का प्रति हेक्टर की दर से छिड्काव करें। ➢ छिड़काव हमेशा फ्लैट फैन नोजल की सहायता से करें । खरपतवार नाशी का प्रयोग हमेशा पर्याप्त मृदा नमी की दशा में ही करें। **मृदा–प्रबंधन** ➢ खरीफ में बोई गई दलहन, तिलहन फसलों एवं धान फसल में बची हुई नत्रजन उर्वरकों की मात्रा का प्रयोग करें। ➢ वर्षा के दौरान होने वाले मृदा क्षरण एवं मृदा कटाव को रोकने हेतु अपने – अपने खेतो का मेड बंधान लगातार करतें रहें। ➢ फासफोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय तथा नत्रजन की शेष मात्रा खडी फसल में प्रयोग करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ वर्षा के दौरान जिन भी किसान भाईयों के फसल वाले खेतों में पानी भर गया है उसका अविलम्ब निकास करने का प्रयत्न करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ मुर्गीपालन से जुड़े किसानो को भी वर्षा ऋतू में अपनी मुर्गियों तथा उनके चूजों का खास ध्यान रखना चाहिए तथा निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए. ➢ वर्षा ऋतु में गंदे पानी को पीने से पेट के कीड़े तथा परजीवियों का प्रकोप अधिक रहता है इसके उपचार व बचाव के लिए अन्तः परजीवी नाशक दवाई अवश्य वर्षा ऋतू में मुर्गियों को देनी चाहिए। ➢ अंडा देने वाली मुर्गियों के लिए इस ऋतू में हीटर व बल्ब आवश्यक हैं जिससे उनके अंडे देने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। ➢ मुर्गियों के रखने के स्थान पर नमी बढ़ने से कई संक्रामक बीमारियां बढ़ती हैं जिसकी रोकथाम हेतु नमी को दूर करने का प्रबंध मुर्गी शेड में करना चाहिए। ➢ मुर्गियां वर्षा ऋतू में अपनी शारीरिक पूर्ति हेतु ज्यादा भोजन की आवश्यकता प्रकट करती हैं इस हेतु मुर्गी पालकों को अधिक दानेदार भोजन मुर्गियों को उपलब्ध कराना चाहिए। ➢ मुर्गियों का टीकाकरण भी वर्षा ऋतू में फैलने वाली संक्रामक बीमारियों से बचाव हेतु आवश्यक है।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ धान में पत्ती लपेटक के नियंत्रण हेतु खेत की निगरानी कर प्राकृतिक शत्रुओं (परभक्षी) का फसल वातावरण में संरक्षण करें। क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.25 ली0 प्रति0 हे0 की दर से छिड़काव करें। हरा फुदका के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। भूरा फुदका के नियंत्रण हेतु यदि सम्भव हो तो खेत से पानी निकाल देना चाहिए व यूरिया की टाप ड्रेसिंग रोक देनी चाहिए। नीम तेल @ 5 मिली प्रति ली के घोल का छिड़काव करें अथवा बुप्रोफेजिन 25

		प्रतिशत एस0सी0 1–2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें। ➢ मक्का/ज्वार/बाजरा में प्ररोह मक्खी के प्रभावी क्षेत्रों में मृत गोभ दिखाई देते ही प्रकोपित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिये। कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.5 लीटर रसायन को प्रति हे0 की दर से 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु फसल की साप्ताहिक निगरानी करना चाहिये। कीट के नियंत्रण हेतु 5–10 ट्राइको कार्ड प्रति हे0 की दर से प्रयोग करना चाहिये। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.50 लीटर मात्रा को प्रति हे0 की दर से 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ मक्का में फाल आर्मीवर्म के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट कीटनाशी की 4 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें अथवा क्लोरंतरनिलीप्रोल रसायन का 4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें। ➢ उर्द/मूँग में रोग के वाहक कीट सफेद मक्खी की रोकथाम के लिये पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें व इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रैप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	**<u>अगस्त माह के प्रमुख कार्य</u>** **फलो में पौधरोपण :** अगस्त माह किन्नू, माल्टा, अमरूद तथा पपीता जैसे फलवृक्ष लगाने का उत्तम समय है। परन्तु ध्यान रहे कि फलपौध उत्तम दर्जे का ही हों। पौधों को निर्धारित स्थान पर उतना ही गाड़े जितना वे नर्सरी में थे। पौधों की देख –रेख अच्छी प्रकार से करें। मूलवृन्त पर नये फुटान को हटा दें तथा पौधों को सीधा रखने के लिए बनछटी का प्रयोग करें। **वायु अवरोधक :** वायु अवरोधकों को उत्तर – पष्चिम दिशा में इसी माह में लगायें। यदि इन्हें बाग के चारों ओर लगाया जायें तो और अच्छा होगा। अर्जुन, आंवला, देशी जामुन, देषी देशी आम के पौधे इस क्षेत्र के लिए उत्तम वायु अवरोधक है। वायु अवरोधकों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए बडे पौधों के मध्य या दूसरी पंक्ति में छोटे आकार के पौधे जैसी देशी बेर, जटटी–खटटी, करौंदा, शहतूत आदि लगायें। वायु अवरोधक वृक्षों की आपस मे दूरी 4–5 मीटर रखें। इन वृक्षों की जड़ों को मुख्य बाग में जाने से रोकने के लिए 1 से 1.5 मीटर गहरी खाई इन वृक्षों के पास बाग की और खोद दें। **नर्सरी के कार्य** मूलवृन्त तैयार करने के लिए आम के गुठलियों का रोपण नर्सरी में करना चाहिए आम अमरूद मे विभेद कलम प्रवर्धन करना चाहिए आम में साईड ग्राटिंग का कार्य करना चाहिए मूलवृन्त तैयार करने हेतु रंगपुर लाइम , जट्टी – खट्टी के बीज की बुवाई नर्सरी में करें। बिजाई से पूर्व बीजे को 52 सेटीग्रेड तापमान वाले पानी से दस मिनट तक उपचारित करें, ताकि फॅाइटोफथोरा बीमारी से बच जा सकें। **आम**

		सिल्ली कीट की रोकथाम के लिए 5–10 अगस्त के बीच एजाडीरेक्टिन 3000 पीपीएम ताकत का 2 मिली लिटर को पानी में घोलकर 10–15 दिनों के अंतराल पर 3 छिड़काव करें । कीट प्रभावित टहनियों के नुकीली गाँठो की छंटाई करें । **पपीता** कॉलर रॉट के प्रकोप से पौधे जमीन के सतह से ठीक ऊपर गल कर गिर जाते है । इसके नियंत्रण के लिए पौधशाला से पौधों को रिडोमिल (2 ग्रा./ली.) दवा का छिड़काव करें, खेत में जलभराव न होने दें और जरूरत पड़ने पर खड़ी फल में भी रिडोमिल (2 ग्रा./ली.) के घोल से जल सिंचन करें । **केला** पनामा विल्ट के रोकथाम के लिए बैविस्टीन के 1.5 मिली. ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल से पौधों के चारों तरफ की मिट्टी को 20 दिन के अंतराल से दो बार छिड़काव कर देना चाहिए । **अमरुद** जस्ता तत्व की कमी होने से पत्तियों का पिला पड़ना, छोटा होना तथा पौधों की बढ़वार कम हो जाने के लक्षण मिलते है। इसके नियंत्रण के लिए 2 प्रतिशत जिंक सल्फेट का छिड़काव अथवा 300 ग्रा. जिंक सल्फेट का पौधों की जड़ों में देना लाभप्रद पाया गया है। **कटहल** तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु छिद्र को किसी पतले तार से साफ करके नुवाक्रान का घोल (10 मिली.ली.) अथवा पेट्रोल या केरोसिन तेल के चार–पाँच बूंद रुई में डालकर गीली चिकनी मिट्टी से बंद कर दें। इस प्रकार वाष्पीकृत गंध के प्रभाव से तना बेधक कीट मर जाते हैं एवं तने में बने छिद्र धीरे–धीरे भर जाते हैं।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	**वानिकी पौधशाला / नर्सरी संचालन** **जल निकासी एवं सिंचाईः** अगस्त में पर्याप्त वर्षा होने के कारण पौधशाला में पानी देना कम या बंद कर दें। पॉलीबैग एवं क्यारियों में जलभराव न हो, इसके लिए उचित निकासी व्यवस्था बनाए रखें। **खरपतवार नियंत्रण (महत्वपूर्ण):** अगस्त की बारिश से खरपतवार तेजी से बढ़ते हैं। पॉलीबैगों के अंदर, क्यारियों के बीच, तथा खेत में लगे पौधों के आस–पास निराई–गुड़ाई अवश्य करें, ताकि पोषक तत्वों, नमी और धूप की प्रतिस्पर्धा कम हो। **पोषण प्रबंधनः** बढ़ते मौसम में पौधों की मजबूती के लिए एन.पी.के. (19:19:19) की पर्णीय स्प्रे करें या गोबर की स्लरी (घोल) का प्रयोग करें। दोनों को एक साथ न लगाएँ। **ग्रेडिंग एवं छँटाई :** स्वस्थ एवं सबल पौधों को कमजोर पौधों से अलग करें, ताकि समान वृद्धि हो सके और प्रबंधन आसान हो। पॉलीथीन थैलियों जिनमें बीज अंकुरित नहीं हुए हैं को स्वस्थ व विकसित पौध से प्रतिस्थापित/प्रत्यारोपित करें। **रोग एवं कीट प्रबंधन :** नमी के कारण फफूंदी (डैम्पिंग ऑफ, पत्ती धब्बा) एवं कीटों का प्रकोप बढ़ सकता है। आवश्यकतानुसार उचित फफूंदनाशी/कीटनाशक का छिड़काव करें। पौधााला में आद्रपतन या कमरतोड रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम (10ग्राम)+मेन्कोजेब(25ग्राम) प्रति लीटर पानी के घोल से रोक के लक्षण दिखते ही सिंचाई करें। **कृषि–वानिकी प्रणाली**

		कृषि–बागवानी–वानिकीः बबूल, नीम, शीशम (टिम्बर) + आम, अमला, गुआवा (फल). मौसमी फसलों का मिश्रण अपनाएँ। **औद्योगिक कृषिवानिकीः** दीर्घकालिक लाभ के लिए गम्हार, मेलिया डुबिया, या कदम जैसी उच्च–मूल्य वाली प्रजातियाँ लगाएँ। **औषधीय एवं बाँस मॉडलः** इस मौसम में बाँस और त्रिफला (आँवला, हरड़, बहेड़ा) जैसी औषधीय प्रजातियों की स्थापना एवं रखरखाव करें, जो इस क्षेत्र के लिए उपयुक्त हैं। जून / जुलाई माह में रोपित पौध, जो कि मृत हो गए हैं, स्वस्थ पौधों से प्रत्यारोपित करें। रोपित पौधें के थालों में निराई गुड़ाई करें तथा साथ ही साथ उजागर जड़ों को पुनः मिट्टी से आच्छादित करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय	6. डॉ मयंक दुबे 7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 10. डॉ जगन्नाथ पाठक 11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार